प्रेमचंद के फटे जूते (हरिशंकर परसाई)

पाठ का परिचय

प्रेमचंद का नाम हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकारों में प्रथम श्रेणी में आता है। इसी कारण उन्हें कथा-सम्राट की उपाधि साहित्य-जगत् द्वारा प्रदान की गई। वे जितने उच्चकोटि के विचारक और साहित्यकार थे, उतने ही सादगी के पोषक भी थे। आज के संदर्भ में यह बात देखने को प्रायः नहीं मिलती। आज व्यक्ति जितनी उच्चकोटि का विचारक होता है, उससे भी उच्चकोटि का वह दंभी, आडंबरी और दिखावा-पसंद होता है। प्रेमचंद के व्यक्तित्व की सादगी और वर्तमान की दिखावे की प्रवृत्ति एवं अवसरवादिता पर लेखक **हरिशंकर परसाई** ने अंतर्भेदी सामाजिक दृष्टि के द्वारा पाठ में करारा व्यंग्य प्रस्तुत किया है। **'प्रेमचंद के फटे जूते'** नामक इस पाठ में वर्तमान के तथाकथित सभ्य और पढ़े-लिखे समाज की वैचारिक सोच पर चोट की गई है।

पाठ का सारांश

'प्रेमचंद के फटे जूते' हरिशंकर परसाई द्वारा रचित एक व्यंग्यपरक निबंध है। प्रेमचंद के फटे जूतों को लक्ष्य करके हिंदी के सम्मानित साहित्यकारों की दुर्दशा का उन्होंने व्यंग्यपरक चित्रण प्रस्तुत किया है। जो साहित्यकार समाज की कुरीतियों को मिटाने के लिए उन्हें ठोकरें मारता रहता है, समाज उसे बदले में एक जोड़ी ठीक-ठाक जूते पहनने योग्य भी नहीं समझता। साहित्यकार की दरिद्रता में कोई उसका साथ नहीं देता।

प्रेमचंद : चित्र में–लेखक के सामने प्रेमचंद का एक चित्र है, जिसमें वे अपनी पत्नी के साथ बैठे हैं। प्रेमचंद कुरता-धोती पहने हैं, सिर पर टोपी है, गालों की हड्डियाँ उभर आई हैं। पैरों में केनवस के जूते हैं, जिनके फीतों की पतरियाँ निकल गई हैं। इसलिए वे बेतरतीबी से बँधे दिखते हैं। लेखक देखता है कि प्रेमचंद के बाएँ जूते में एक बड़ा छेद हो गया है, जिससे अंगुली बाहर झाँक रही है।

लेखक की चिंता–प्रेमचंद के फटे जूते देखकर लेखक चिंता में पड़ जाता है कि यदि फोटो खिंचाते समय यह वेशभूषा है तो फिर वास्तविक जीवन में वे कैसे रहते होंगे। फिर लेखक सोचता है कि प्रेमचंद जैसा सच्चा-सरल व्यक्ति घर और बाहर की अलग-अलग पोशाकें शायद ही रखेगा। प्रेमचंद को लेखक अपना साहित्यिक पूर्वज मानता है। वह सोचता है कि वे हमारे पूर्वज हैं, फिर

भी वे अपने फटे जूतों की ओर से बेपरवाह हैं और इसके बावजूद उनके चेहरे पर विश्वास देखते ही बनता है।

फोटो में व्यंग्य-भरी हँसी–लेखक फोटो में प्रेमचंद को हँसती हुई मुद्रा में देखता है। उसे उनकी वह मुसकान आश्चर्यचकित कर देने वाली एवं व्यंग्य से भरी प्रतीत होती है। लेखक सोचता है कि क्या इसका कोई कारण भी हो सकता है, जो प्रेमचंद ने फटे जूते पहने ही फोटो खिंचवा ली। फिर वह सोचता है कि शायद पत्नी का आग्रह रहा हो। लेखक प्रेमचंद की हालत देखकर रो पड़ने से स्वयं को रोक नहीं पाता, किंतु प्रेमचंद की आँखों का दर्द उसे शांत कर देता है।

लेखक सोचता है कि आजकल तो लोग फोटो खिंचवाने के लिए कपड़े, जूते तो क्या बीवी तक उधार की माँग लेते हैं, फिर प्रेमचंद ने किसी से जूते क्यों न माँग लिए। आजकल लोग इत्र लगाकर फोटो खिंचवाते हैं, जिससे कि फोटो में से खुशबू आए। गंदे आदमियों की फोटो में भी खुशबू आती है। प्रेमचंद का फटा जूता देखकर लेखक का मन बार-बार ग्लानि से भर उठता है।

लेखक के घिसे जूते–लेखक कहता है कि मेरा जूता भी तले की ओर से कुछ घिस गया है, फिर भी प्रेमचंद के जूते से तो बेहतर ही है, क्योंकि वह ऊपर से पूरी तरह सही-सलामत है। वह ऊपरी परदे का भेद जानता है, इसलिए वह अंगुली को बाहर नहीं निकलने देता। लेखक कहता है कि प्रेमचंद की तरह सीधेपन में वह फटे जूते पहनकर फोटो तो बिलकुल ही नहीं खिंचवा सकता।

प्रेमचंद की मुसकान में छिपा व्यंग्य और रहस्य–लेखक सोचता है कि प्रेमचंद की मुसकान में छिपा व्यंग्य और रहस्य क्या है। क्या कोई हादसा हो गया है? किसी होरी का गोदान हो गया क्या? या फिर हलकू किसान का खेत नीलगाय चर गई? या घीसू का बेटा माधव अपनी पत्नी के कफ़न के चंदे की शराब पी गया? या फिर प्रेमचंद किसी महाजन के तगादों से बचने के लिए लंबा चक्कर लगाकर घर लौटते रहे? याद आया, भक्तकवि कुंभनदास का जूता भी तो फतेहपुर सीकरी आने-जाने में घिस गया था।

जूते फटने का रहस्य–लेखक को बोध होता है कि प्रेमचंद शायद जीवनभर किसी कठोर चीज़ को ठोकर मारते रहे हैं। वे रास्ते में खड़े टीले से बचकर निकलने के बजाय उस पर जूते से ठोकरें मारते रहे हैं। वे समझौता नहीं कर सके। जैसे 'गोदान' का होरी 'नेम-धरम' को नहीं छोड़ सका, वैसे ही प्रेमचंद भी 'नेम-धरम' को नहीं छोड़ सके। यह उनके लिए मुक्ति का साधन था।

लेखक को लगता है कि प्रेमचंद के फटे जूते से झाँकती अंगुली शायद उसी की ओर संकेत कर रही है, जिसे ठोकर मार-मारकर उन्होंने अपने जूते फाड़ लिए थे। वे अभी भी उन लोगों को देखकर हँस रहे हैं, जो अंगुली को ढकने की चिंता में तलुवे घिसे जा रहे हैं। प्रेमचंद ने कम-से-कम अपना पाँव तो बचा लिया, परंतु लोग हैं कि अपने तलुवे का नाश किए जा रहे हैं। वे यह नहीं सोच रहे कि तलवे का नाश होने पर वे चलेंगे कैसे।

भाग-1

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) प्रेमचंद का एक चित्र मेरे सामने है, पत्नी के साथ फोटो खिंचा रहे हैं। सिर पर किसी मोटे कपड़े की टोपी, कुरता और धोती पहने हैं। कनपटी चिपकी है, गालों की हड्डियाँ उभर आई हैं, पर घनी मूँछें चेहरे को भरा-भरा बतलाती हैं।

पाँवों में केनवस के जूते हैं, जिनके बंद बेतरतीब बाँधे हैं। लापरवाही से उपयोग करने पर बंद के सिरों पर ही लोहे की पतरी निकल जाती है और छेदों में बंद डालने में परेशानी होती है। तब बंद कैसे भी कस लिए जाते हैं।

दाहिने पाँव का जूता ठीक है, मगर बाएँ जूते में बड़ा छेद हो गया है जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई है।

मेरी दृष्टि इस जूते पर अटक गई है। सोचता हूँ–फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी? नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी–इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है।

1. लेखक के सामने क्या है–
(क) एक पेंटिंग (ख) एक खिलौना
(ग) प्रेमचंद का चित्र (घ) गांधीजी का चित्र।

2. प्रेमचंद के सिर पर क्या है–
(क) बारीक कपड़े की टोपी
(ख) मोटे कपड़े की टोपी
(ग) पीली पगड़ी
(घ) कुछ नहीं है।

3. प्रेमचंद के पाँव में क्या है–
(क) चप्पल (ख) जूते
(ग) खड़ाऊँ (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. जूतों के बंद कैसे बँधे हैं–
(क) कसकर (ख) बहुत ढीले
(ग) बेतरतीब (घ) बँधे नहीं हैं।

5. लेखक के अनुसार लेखक में कौन-सा गुण नहीं है–
(क) पोशाकें बदलने का (ख) जूते बदलने का
(ग) फोटो खिंचाने का (घ) हँसने-हँसाने का।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (क)।

(2) मैं चेहरे की तरफ़ देखता हूँ। क्या तुम्हें मालूम है, मेरे साहित्यिक पुरखे कि तुम्हारा जूता फट गया है और अँगुली बाहर दिख रही है? क्या तुम्हें इसका ज़रा भी अहसास नहीं है? ज़रा लज्जा, संकोच या झेंप नहीं है? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि धोती को थोड़ा नीचे खींच लेने से अँगुली ढक सकती है? मगर फिर भी तुम्हारे चेहरे पर बड़ी बेपरवाही, बड़ा विश्वास है! फोटोग्राफर ने जब 'रेडी-प्लीज़' कहा होगा, तब परंपरा के अनुसार तुमने मुसकान लाने की कोशिश की होगी, दर्द के गहरे कुएँ के तल में कहीं पड़ी मुसकान को धीरे-धीरे खींचकर ऊपर निकाल रहे होंगे कि बीच में ही 'क्लिक' करके फोटोग्राफर ने 'थैंक यू' कह दिया होगा। विचित्र है यह अधूरी मुसकान। यह मुसकान नहीं, इसमें उपहास है, व्यंग्य है!

1. लेखक किधर देखता है–
(क) बाईं तरफ
(ख) दाईं तरफ
(ग) प्रेमचंद के चेहरे की तरफ
(घ) प्रेमचंद के पाँव की तरफ।

2. लेखक ने प्रेमचंद को अपना क्या बताया है–
(क) साहित्यिक गुरु (ख) साहित्यिक पुरखा
(ग) साहित्यिक मित्र (घ) साहित्यिक भ्राता।

3. प्रेमचंद को किस बात का अहसास नहीं है–
(क) टोपी फटने का (ख) धोती फटने का
(ग) जूता फटने का (घ) कुरता फटने का।

4. प्रेमचंद को जूते फटने के विषय में जरा भी नहीं है–
(क) लज्जा (ख) संकोच
(ग) झेंप (घ) ये सभी।

5. **लेखक के अनुसार प्रेमचंद की अधूरी मुसकान कैसी है–**
(क) मनमोहक (ख) विचित्र
(ग) बनावटी (घ) वास्तविक।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(3) टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस ज़माने में भी पाँच रुपये से कम में क्या मिलते होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडंबना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ। तुम महान कथाकार, उपन्यास-सम्राट, युग-प्रवर्तक, जाने क्या-क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है!

1. **टोपी की कीमत क्या है–**
(क) चार आना (ख) दो आना
(ग) आठ आना (घ) दो रुपये।

2. **प्रेमचंद के समय जूते की कीमत क्या रही होगी–**
(क) दस रुपये (ख) बीस रुपये
(ग) पाँच रुपये (घ) आठ रुपये।

3. **प्रेमचंद किसके मारे हुए थे–**
(क) गरीबी के
(ख) मज़बूरी के
(ग) जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के
(घ) पारिवारिक कलह के।

4. **लेखक को क्या चीज़ तीव्रता से चुभ रही थी–**
(क) कील (ख) सुई
(ग) कंकड़ (घ) विडंबना।

5. **प्रेमचंद क्या कहलाते थे–**
(क) महान कथाकार (ख) उपन्यास-सम्राट
(ग) युग-प्रवर्तक (घ) ये सभी।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(4) मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है। यों ऊपर से अच्छा दिखता है। अंगुली बाहर नहीं निकलती, पर अँगूठे के नीचे तला फट गया है। अँगूठा ज़मीन से घिसता है और पैनी मिट्टी पर कभी रगड़ खाकर लहूलुहान भी हो जाता है। पूरा तला गिर जाएगा, पूरा पंजा छिल जाएगा, मगर अंगुली बाहर नहीं दिखेगी। तुम्हारी अंगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है। मेरी अंगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है। तुम परदे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं!

तुम फटा जूता बड़े ठाठ से पहने हो! मैं ऐसे नहीं पहन सकता। फोटो तो ज़िंदगीभर इस तरह नहीं खिचाऊँ, चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे।

1. **लेखक का जूता कैसा है–**
(क) नया है (ख) पुराना है
(ग) बहुत अच्छा नहीं है (घ) बहुत अच्छा है।

2. **लेखक का जूता कहाँ से फट गया है–**
(क) आगे से (ख) पीछे से
(ग) नीचे से (घ) ऊपर से।

3. **लेखक के फटे जूते का परिणाम है–**
(क) अँगूठा ज़मीन से घिसता है
(ख) पैनी मिट्टी से रगड़ खाकर लहूलुहान हो जाता है
(ग) पूरा पंजा छिल जाता है
(घ) उपर्युक्त सभी।

4. **लेखक के अनुसार प्रेमचंद किसका महत्त्व नहीं जानते–**
(क) जूते का (ख) परदे का
(ग) टोपी का (घ) कुरते का।

5. **प्रेमचंद फटा जूता कैसे पहने हुए हैं–**
(क) बड़ी विवशता से (ख) बड़े दुःख से
(ग) बड़े ठाठ से (घ) लापरवाही से।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के लेखक का नाम है–**
(क) जाकिर हुसैन (ख) श्यामाचरण दुबे
(ग) प्रेमचंद (घ) हरिशंकर परसाई।

2. **प्रेमचंद किसके साथ फोटो खिंचवा रहे हैं–**
(क) अपने भाई के साथ (ख) परिवार के साथ
(ग) पत्नी के साथ (घ) मित्र के साथ।

3. **फोटो के आधार पर प्रेमचंद के व्यक्तित्व की विशेषता है–**
(क) टोपी, कुरता, धोती धारण किए हैं
(ख) कनपटी चिपकी है
(ग) गालों की हड्डियाँ उभर आई हैं
(घ) उपर्युक्त सभी।

4. **प्रेमचंद के पाँव में कैसे जूते हैं–**
(क) चमड़े के (ख) रबर के
(ग) केनवस के (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. **प्रेमचंद के कौन-से पाँव का जूता फटा है–**
(क) बाएँ पाँव का (ख) दाएँ पाँव का
(ग) दोनों पाँवों के (घ) किसी पाँव का नहीं।

6. **लेखक की दृष्टि प्रेमचंद की किस चीज़ पर अटक गई–**
(क) टोपी पर (ख) धोती पर
(ग) चेहरे पर (घ) फटे जूते पर।

7. **प्रेमचंद की वेशभूषा से क्या पता चलता है–**
(क) उनकी आडंबरपूर्ण जीवन-शैली का
(ख) उनकी अच्छी आर्थिक स्थिति का
(ग) उनकी कमज़ोर आर्थिक स्थिति का
(घ) उनकी श्रृंगार प्रियता का।

8. **लेखक ने 'मेरे साहित्यिक पुरखे' किसे कहा है–**
(क) प्रेमचंद को (ख) रवींद्रनाथ टैगोर को
(ग) अपने दादाजी को (घ) भारतेंदु हरिश्चंद्र को।

9. **फटे जूते से बाहर दिख रही अंगुली को किससे ढका जा सकता था–**
(क) कपड़े से (ख) हाथ से
(ग) जुराब से (घ) धोती को नीचे करके।

10. **लेखक ने फोटो खिंचवा रहे प्रेमचंद की मुसकान को क्या कहा है–**
(क) मनमोहक मुसकान (ख) अधूरी मुसकान
(ग) गहरी मुसकान (घ) दंतुरित मुसकान।

11. **लेखक के अनुसार प्रेमचंद ने किसके आग्रह पर फोटो खिंचवाया होगा–**
(क) मित्रों के (ख) अपने बच्चों के
(ग) अपनी पत्नी के (घ) लेखक के।

12. **जूता हमेशा किससे कीमती रहा है–**
(क) टोपी से (ख) धोती से
(ग) कुरते से (घ) चादर से।

13. **टोपी तथा जूता किस-किसके प्रतीक हैं–**
   (क) टोपी अमीरी का, जूता गरीबी का
   (ख) टोपी मान का, जूता अपमान का
   (ग) टोपी अच्छाई का, जूता बुराई का
   (घ) टोपी सम्मान का, जूता शक्ति का।

14. **लोग माँगी हुई वस्तुओं से क्या करते हैं–**
   (क) वर दिखाई करते हैं (ख) बरात निकालते हैं
   (ग) फोटो खिंचवाते हैं (घ) ये सभी।

15. **लेखक के अनुसार प्रेमचंद कहलाते हैं–**
   (क) महान कथाकार (ख) उपन्यास-सम्राट
   (ग) युग-प्रवर्त्तक (घ) ये सभी।

16. **लेखक के अनुसार एक जूते पर कितनी टोपियाँ न्योछावर हैं–**
   (क) पाँच (ख) दस
   (ग) पंद्रह (घ) पचीसों।

17. **प्रेमचंद की व्यंग्य मुसकान लेखक पर क्या प्रभाव डालती है–**
   (क) लेखक को आनंदित करती है
   (ख) उसके हौसले पस्त करती है
   (ग) उसकी ताकत बढ़ाती है
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

18. **प्रेमचंद के फटे जूते लेखक के जूतों से क्यों श्रेष्ठ हैं–**
   (क) प्रेमचंद के जूते आरामदायक हैं
   (ख) प्रेमचंद के जूते कीमती हैं
   (ग) प्रेमचंद के जूते सुंदर हैं
   (घ) प्रेमचंद के जूतों में पाँव सुरक्षित हैं।

19. **कौन परदे का महत्त्व नहीं जानता–**
   (क) लेखक (ख) प्रेमचंद
   (ग) लेखक का मित्र (घ) इनमें से कोई नहीं।

20. **लेखक के अनुसार प्रेमचंद का जूता कैसे फटा–**
   (क) घूमने से
   (ख) दौड़ने से
   (ग) किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारने से
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर– **1.** (घ) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (घ) **7.** (ग) **8.** (क) **9.** (घ) **10.** (ख) **11.** (ग) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (घ) **15.** (घ) **16.** (घ) **17.** (ख) **18.** (घ) **19.** (ख) **20.** (ग)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर प्रेमचंद की वेशभूषा और रहन-सहन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : प्रेमचंद भारतीय गाँवों के एक साधारण किसान की भाँति जीवन व्यतीत करते थे। थे तो वे युग-प्रवर्त्तक, महान कथाकार, उपन्यास-सम्राट; फिर भी उनका व्यक्तिगत दैनिक जीवन अत्यंत सादा था। वे राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार थे। समाज में उनका अच्छा सम्मान था, फिर भी वे अत्यंत सादा, साधारण तथा आडंबरहीन जीवन बिताते थे। अपनी व्यक्तिगत कमज़ोरियों को वे छिपाने का प्रयास भी नहीं करते थे। वे साधारण धोती-कुरता और बंडी पहनते थे। उनके जूतों की स्थिति देखकर उनकी हीन आर्थिक स्थिति का सहज अनुमान लगाया जा सकता था।

प्रश्न 2 : प्रेमचंद के फोटो में लेखक का ध्यान उनकी किन-किन चीज़ों की ओर गया? उनकी विशेष दृष्टि किस ओर गई?

उत्तर : प्रेमचंद के फोटो में लेखक का ध्यान उनके सिर पर रखी किसी मोटे कपड़े की टोपी, कुरते, धोती, चिपकी कनपटी, गालों की उभर आई हड्डियों और घनी मूँछों की ओर गया। उनकी विशेष दृष्टि उनके फटे जूते की ओर गई, जिसमें से बाएँ पैर की अंगुली बाहर निकल रही थी।

प्रश्न 3 : 'यह मुसकान नहीं, इसमें उपहास है, व्यंग्य है!' यहाँ पर किस मुसकान की ओर संकेत है?

उत्तर : यहाँ पर व्यक्ति की बनावटी मुसकान की ओर संकेत किया गया है। मन में घृणा, दुःख या क्रोध होने पर भी जब व्यक्ति अपने चेहरे पर मुसकान लाता है तो वह मुसकान नहीं, बल्कि उपहास या व्यंग्य होता है। प्रेमचंद के मन में सैकड़ों दुःख थे, ऐसे में फोटो खिंचवाते समय उनके चेहरे पर जो मुसकान है, वह वास्तव में समाज का उपहास या व्यंग्य है।

प्रश्न 4 : फोटो का महत्त्व बताने के लिए लेखक ने कौन-कौन से तर्क दिए हैं?

उत्तर : फोटो का व्यक्ति के जीवन में बड़ा महत्त्व है, इसलिए तो वह फोटो खिंचवाने के लिए जूते और कोट आदि उधार माँग लेता है। फोटो खिंचवाने के लिए ही तो वह माँगी गई मोटरकार से अपनी बरात निकालता है और कभी-कभी तो बीवी तक माँग ली जाती है।

प्रश्न 5 : बनिये के तगादे का मील-दो-मील के चक्कर से क्या संबंध है?

उत्तर : बनिये के तगादे का मील-दो-मील के चक्कर से यह संबंध है कि जब किसी व्यक्ति को बनिये का उधार चुकाना होता है और उसके पास पैसे नहीं होते, तब वह बनिये के तगादे से बचने के लिए उसके घर की ओर से निकलना ही बंद कर देता है, भले ही उसे अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए मील-दो-मील का ज़्यादा चक्कर काटना पड़े। वह जानता है कि यदि मैं बनिये के घर की ओर से निकला तो वह अपने उधार के लिए अवश्य रोकेगा।

प्रश्न 6 : प्रेमचंद का जूता फटने की कौन-सी संभावनाएँ लेखक ने व्यक्त की हैं?

उत्तर : प्रेमचंद का जूता फटने की अनेक संभावनाएँ लेखक ने व्यक्त की हैं। उसमें पहली संभावना तो यह है कि प्रेमचंद किसी सख्त चीज़ को जूते से ठोकर मारते रहे हैं। सदियों से किसी चीज़ पर जमी परत-दर-परत को हटाने के लिए जूते से ठोकर मार-मारकर उन्होंने अपना जूता फाड़ लिया है या रास्ते में खड़े टीले पर अपना जूता आजमाकर उसे फाड़ लिया है।

प्रश्न 7 : हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्द-चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है, उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-कौन-सी विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं?

उत्तर : हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्द-चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है, उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर आती हैं–

(i) संघर्षशीलता–प्रेमचंद ने जीवनभर कठिनाइयों और सामाजिक बुराइयों से संघर्ष किया। लेखक के अनुसार उनके पैर का जूता बुराइयों को ठोकर मारने से ही फटा है।

(ii) सादगी–प्रेमचंद बहुत सरल और सादे व्यक्ति थे। उन्हें आडंबर या दिखावा पसंद नहीं था। वे जैसे वास्तविक जीवन में थे, वैसे ही दूसरों को दिखाना चाहते थे।

(iii) **आर्थिक अभाव**–प्रेमचंद का सारा जीवन अभाव में व्यतीत हुआ। अपने समय के महान साहित्यकार होने पर भी उन्होंने एक आम भारतीय ग्रामीण की तरह आर्थिक तंगी में जीवन गुज़ारा।

प्रश्न 8 : 'जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।' इन पंक्तियों में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **स्पष्टीकरण**–जीवन की यह विडंबना है कि जो निम्नस्तर का है परंतु पैसे वाला है, उसे सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। जैसे जूते का स्थान तो पाँव में है, परंतु है वह टोपी से महँगा। इसलिए उसकी बड़ी इज़्ज़त है अर्थात् सिर पर बैठने वाली टोपी का कोई महत्त्व नहीं, उसका कोई सम्मान नहीं। आजकल तो जूतों का अर्थात् धनवानों का सम्मान हो रहा है। उनके समक्ष सैकड़ों टोपियाँ अर्थात् विद्वान और गुणवान् (लेकिन गरीब) झुक रहे हैं। एक धनवान् पच्चीसों गुणवानों को बौना कर देता है, झुकने को विवश कर देता है। गुणी लोग भी अवसरानुकूल जूतों पर झुकते देर नहीं लगाते।

प्रश्न 9 : 'तुम परदे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं।'–व्यंग्य का स्पष्टीकरण कीजिए।

उत्तर : **स्पष्टीकरण**–प्रेमचंद ने कभी परदे को अर्थात् दुराव-छिपाव को महत्त्व नहीं दिया। वास्तविकता को उन्होंने बड़ी सरलता और सहजता के साथ स्वीकार कर लिया। वे इस बात से आत्मसंतुष्टि का अनुभव करते थे कि उनके बाहर और अंदर के व्यक्तित्व में कोई अंतर नहीं है, वे एक सच्चे इनसान थे। वे कथनी-करनी में एक थे। यहाँ तक कि फोटो खिंचाते समय भी उनके पास वही आम वेशभूषा थी।

लेखक आज के युग के लोगों का परदे के प्रति आकर्षण देखकर व्यंग्य करता है कि हम तो परदे को बड़ा गुण मानते हैं। आज के युग में अपने दोष छुपाकर अपनी अच्छी छवि दिखाना ही होशियारी है। ऐसा ही व्यक्ति आज गुणी और श्रेष्ठ माना जाता है।

प्रश्न 10 : 'जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अंगुली से इशारा करते हो।'–व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **स्पष्टीकरण**–लेखक कहते हैं कि जिसे तुमने (प्रेमचंद ने) घृणा के योग्य समझा, ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी ओर पैर की अंगुली से इशारा करने के लिए ही तुमने अपने जूते का वह हिस्सा खोल लिया है। घृणित वस्तु के लिए तुमने पैर की ठोकर का सहारा ही लिया, भले ही उसमें तुमने अपना जूता फाड़ डाला। वास्तव में संघर्ष से तुम कभी चूके नहीं।

प्रश्न 11 : पाठ में एक जगह पर लेखक सोचता है कि 'फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी?' लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि 'नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी।' आपके अनुसार इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार की क्या वजहें हो सकती हैं?

उत्तर : प्रेमचंद के संबंध में उनकी पोशाक को लेकर लेखक के मत बदलने के दो कारण हो सकते हैं–

लेखक की **पहली टिप्पणी** सामान्य जगत् के लोगों के व्यवहार पर आधारित है। आमतौर पर लोग अपने घर में पहनने और विशेष अवसरों पर पहनने के वस्त्रों में अंतर रखते हैं, परंतु प्रेमचंद सामान्य व्यक्ति नहीं हैं। वे इन सबसे अलग हैं, अतः लेखक के मन-मस्तिष्क में **दूसरी प्रतिक्रिया** उठी–लेखक ने देखा कि प्रेमचंद जीवनभर सरल-सहज बने रहे। उन्होंने दिखावटी जीवन कभी जिया ही नहीं, इसलिए पोशाकें बदलने की बात उनके साथ लागू नहीं होती। पोशाकें वे बदलते हैं, जो अवसरानुकूल आचरण करते हैं। प्रेमचंद ऐसे नहीं थे।

प्रश्न 12 : 'प्रेमचंद के फटे जूते' एक व्यंग्य है। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौन-सी बातें आकर्षित करती हैं?

उत्तर : इस व्यंग्य-लेख में हमें लेखक की जो बात सर्वाधिक आकर्षक लगी है, वह है उसकी बात में से बात निकालने की खूबी। विस्तारण शैली के द्वारा लेखक एक संदर्भ से दूसरे संदर्भ में बड़ी चतुराई से प्रवेश कर जाता है। कोई बीज जिस प्रकार अंकुर, पल्लव, पौधे से होते हुए तना, वृक्ष, फूल और फल तक पहुँच जाता है, उसी प्रकार प्रेमचंद के फटे जूते से व्यंग्यकार अपनी बात शुरू करता है और धीरे-धीरे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की अनोखी, अनजानी-सी विशेषताएँ हमारे सामने उद्घाटित कर देता है। लेखक हरिशंकर परसाई की सूक्ष्म अंतर्दृष्टि ने जिस प्रकार प्रेमचंद के व्यक्तित्व को पहचाना है, वह अप्रतिम है।

प्रश्न 13 : पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर : पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग विशेष रूप से 'मार्ग की रुकावट या बाधाओं' के लिए हुआ लगता है। जिस प्रकार एक प्रवाहमान् नदी की धारा मार्ग में पड़ी किसी चट्टान से अपनी गति खो देती है, उसी प्रकार जीवनरूपी नदी का स्वाभाविक विकास समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों, भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, छुआछूत, जाति-पाँति, महाजनी सभ्यता, अशिक्षा, गरीबी, दासता आदि के रूप में स्थित 'टीलों' से बाधित होता है। संघर्षशील लोग इन टीलों को अपने जूते की ठोकर पर रखते हैं और अवसरवादी बचकर निकल जाते हैं।

प्रश्न 14 : 'प्रेमचंद आडंबररहित जीवन के पक्षधर थे'–कथन पर अपना मंतव्य दीजिए।

उत्तर : प्रेमचंद के संबंध में उपर्युक्त कथन पूर्णतः सत्य है। प्रेमचंद सहज, स्वाभाविक जीवन जीने में विश्वास रखते थे। यदि ऐसा न होता तो वे अपने व्यक्तित्व को यों ही न बनाए रखते। वे घर के अंदर और बाहर की वेशभूषा में अंतर नहीं करते थे। गरीबी, फटेहाली, दुर्दशा को वे सहज रूप से स्वीकार कर चुके थे। उनमें कोई हीनता की ग्रंथि नहीं थी। दोष या कमज़ोरी को छिपाना उनके स्वभाव का अंग नहीं था। जो व्यक्ति समाज के दोषों को उघाड़कर उनकी असलियत सबके सामने रखता हो, वह अपने दोषों के प्रति भी वैसा ही सच्चा हो–यह बात प्रेमचंद से सीखी जा सकती है। बनावटी वेशभूषा उन्हें पसंद न थी, यहाँ तक कि फोटो में भी वे अपनी दैनिक वेशभूषा में नज़र आते हैं।

प्रश्न 15 : 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ में हिंदी लेखकों की स्थिति पर क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर : पाठ 'प्रेमचंद के फटे जूते' में हिंदी लेखकों की आर्थिक दुर्दशा पर व्यंग्य किया गया है। प्रेमचंद जैसे हिंदी के पुरोधा साहित्यकार के फटे जूतों के पीछे छिपे सत्य को लेखक ने बड़ी सफलतापूर्वक उद्घाटित किया है कि हम प्रशंसा और सम्मान तो बहुत देते हैं, परंतु ऐसे साहित्यकारों के जीवन-स्तर को सुधारने के लिए कुछ भी नहीं करते। सम्मान से आत्मिक शांति मिल सकती है, परंतु पेट तो नहीं भरता। जीवनयापन के लिए पर्याप्त धन के अभाव में व्यक्ति सदा फटेहाल रहता है। प्रेमचंद से लेकर परसाई तक सबकी आर्थिक स्थिति खराब ही थी।

प्रश्न 16 : प्रेमचंद 'जनता के लेखक' कैसे कहे जाते हैं?

उत्तर : प्रेमचंद ने भारत की सामान्य जनता के दुःख-दर्द को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना की। उनकी कहानियाँ तथा उपन्यास आम जनता की और शोषित किसानों की कहानियाँ हैं। उदाहरणार्थ–'पूस की रात' का हल्कू ऋण से दबा हुआ है, 'गोदान' में ऋण, पुलिस तथा जातीय शोषण का वर्णन है, 'कफ़न' का माधो जन्म-जन्म का भूखा है, 'सुजान भगत' में लोभी डॉक्टरों का चित्रण है। प्रेमचंद का संपूर्ण साहित्य समाज के वंचित-शोषित-पीड़ित तबके की आह और कराह को मुखरित करता है। उनके साहित्य की प्रामाणिकता असंदिग्ध है। उनके साहित्य के संबंध में कहा गया है–''यदि प्रेमचंदकालीन इतिहास नष्ट भी कर दिया जाए, तब भी प्रेमचंद के साहित्य से तत्कालीन समाज की स्थिति एवं परिस्थिति का पता लग सकता है।'' प्रेमचंद को इसीलिए 'जनता का लेखक' कहना समुचित है।

प्रश्न 17 : लेखक की किसके जूते पर नज़र ठहर गई और क्यों?

उत्तर : लेखक की नज़र प्रेमचंद के बाएँ पाँव के फटे जूते पर ठहर गई। क्योंकि उनके फीते बेतरतीब बँधे हुए थे। फीते के सिरों पर लगी पतरियाँ निकल गई थीं, इसलिए वे जैसे-तैसे बँधे हुए थे। बाएँ पैर का जूता अंगुली की दिशा से फटा हुआ था। उसमें से एक अंगुली झाँक रही थी।

प्रश्न 18 : प्रेमचंद का फटा जूता देखकर लेखक किस सोच में पड़ गए?

उत्तर : फटा जूता देखकर लेखक सोचने लगा कि यदि प्रेमचंद जी की फोटो खिंचाने की पोशाक ऐसी है तो वास्तविक जीवन में पहनी जाने वाली पोशाक कैसी होगी, अर्थात् फोटो खिंचवाते समय भी जब यह बदहाली और दुर्दशा है तो फिर असल ज़िंदगी में उनकी क्या स्थिति होगी। फिर उसने सोचा कि प्रेमचंद का जीवन असल-नकल में नहीं फँस सकता। वह दुहरे व्यक्तित्व के नहीं हो सकते। उसने सोचा कि प्रेमचंद की फोटो और जीवन की वास्तविकता में अंतर हो ही नहीं सकता।

प्रश्न 19 : फोटो का महत्त्व कौन नहीं समझता? लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर : प्रेमचंद फोटो का महत्त्व नहीं समझते थे। लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है; क्योंकि उसने प्रेमचंद की एक फोटो देखी जिसमें वे अपनी पत्नी के साथ बैठे थे। फोटो में प्रेमचंद के बाएँ पाँव का जूता फटा हुआ दिखाई दे रहा था। उसमें से उनकी अंगुली झाँक रही थी। उनके जूतों के फीते भी ढंग से बँधे हुए नहीं थे। प्रायः फोटो देखकर लोग व्यक्ति के सामाजिक और आर्थिक स्तर का आकलन करते हैं। अनेक लोग तो उसके व्यक्तित्व का प्रतिनिधि उसके फोटो को मानते हैं। इसीलिए लोग फोटो खिंचवाते समय खूब सजते-सँवरते हैं, लेकिन प्रेमचंद ने ऐसा नहीं किया।

प्रश्न 20 : लेखक की नज़र में लोग फ़ोटो के लिए क्या-क्या करते हैं?

उत्तर : लेखक की नज़र में लोग जैसे हैं, फोटो में उससे अधिक सुंदर और धनी तथा संपन्न दिखना चाहते हैं। वे इसके लिए जूते, कपड़े, कार आदि उधार माँग लेते हैं, यहाँ तक कि कुछ लोग तो बीवी भी उधार की माँग लेते हैं। कुछ लोग तो इत्र लगाकर फोटो खिंचवाते हैं ताकि उनकी फोटो में भी खुशबू आ जाए।

प्रश्न 21 : 'गंदे-से-गंदे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है'–कहकर लेखक ने क्या कटाक्ष किया है?

उत्तर : ऐसा कहकर लेखक ने उन लोगों पर कटाक्ष किया है, जो अपनी गंदी छवि को फोटो में साफ़-सुथरा और अच्छा बनाकर पेश करते हैं। इस उक्ति में लेखक ने व्यंग्य किया है कि वे गंदे आदमी भी जब फोटो खिंचवाते हैं तो अपनी छवि सुंदर बनाकर आते हैं। वे हर प्रकार के सौंदर्य प्रसाधन का प्रयोग करते हैं और अपनी गंदी छवि को छिपाने का हरसंभव प्रयास करते हैं। इस उक्ति का गूढ़ार्थ यह है कि गंदे आदमी अपने हर गंदे कार्य को छिपाने के लिए ऊपरी तौर पर अच्छे कार्य का दिखावा करते हैं।

प्रश्न 22 : 'टोपी' और 'जूते' का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'टोपी' सिर पर पहनी जाती है, उसे शरीर का सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त है। इस प्रकार 'टोपी' का प्रतीकार्थ–'ऊँचे लोग', 'सम्मानित व्यक्ति' या 'मान-सम्मान' है। 'जूते' पैरों में पहने जाते हैं। उन्हें शरीर का सबसे नीचे का स्थान दिया जाता है। इस प्रकार जूते का प्रतीकार्थ–'नीचे लोग', 'तुच्छ प्राणी' या 'निम्न-स्तर' है।

प्रश्न 23: 'तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे।' –वाक्य में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस वाक्य में प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकार की निर्धनता पर व्यंग्य किया गया है। प्रेमचंद 'टोपी' के समान हिंदी-साहित्य-जगत् के शीर्षस्थ साहित्यकार थे। इस दृष्टि से भारत में उनका खूब आदर-सत्कार होना चाहिए था। उन्हें किसी भी प्रकार की कठिनाई से दूर रखा जाना चाहिए था। उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी होनी चाहिए थी, परंतु हमारे समाज में 'टोपी' का दाम कम है और जूते का ज़्यादा। जिसका दाम ज़्यादा है उसका महत्त्व भी ज़्यादा है। जिसके पास महँगी चीज़ हैं अर्थात् जो महँगी चीज़ खरीद सकता है, उसकी ही समाज में इज़्ज़त भी है। सारांशतः टोपी को जूते के सामने झुकना पड़ता है। लेखक सोचता है कि प्रेमचंद के साथ भी यही हुआ। वे उच्चकोटि के साहित्यकार होकर भी निम्न स्तर का गरीबी और सुविधाहीन जीवन जीते रहे।

प्रश्न 24 : लेखक को कौन-सी विडंबना चुभी और क्यों?

उत्तर : लेखक को यह विडंबना चुभी कि प्रेमचंद जैसा शीर्षस्थ साहित्यकार, जिसे उच्चकोटि का कथाकार, महान उपन्यासकार, युग-प्रवर्तक आदि न जाने क्या-क्या कहा जाता रहा, लेकिन समाज ने उन्हें उचित मूल्य नहीं दिया। वे पहनने के लिए एक जोड़ी जूते भी न जुटा सके। उनका सारा जीवन अभाव और गरीबी में व्यतीत हुआ।

प्रश्न 25 : 'एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।'–इस कथन का लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत कथन का लाक्षणिक अर्थ यह है कि आज समाज में पैसे वालों का ही बोलबाला है। जिसके पास धन-संपदा है, वही मान-सम्मान भी अर्जित करता है। गुणी लोग भी उनके सामने गिड़गिड़ाते हैं। 'जूते' पैसे वालों का और 'टोपी' कम पैसे वालों या निर्धनता का प्रतीक है। 'टोपी' का संबंध बुद्धि से तो है, परंतु वह धनहीन है, जबकि 'जूता' भले ही पैरों में पहना जाता हो, परंतु है पैसे का मज़बूत। इसलिए लेखक ने कहा है कि 'टोपी को जूते के सामने झुकना पड़ता है, कुर्बान होना पड़ता है'–यह कैसी विडंबना है।

प्रश्न 26: ''अंगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है।''–में छिपा व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक प्रकट रूप में अपनी दुर्दशा को ढक रहा है, परंतु अंदर-ही-अंदर उसका हाल भी प्रेमचंद की ही तरह बुरा है। ऊपर से देखने में भले ही उसकी आर्थिक स्थिति प्रेमचंद से बेहतर दिख रही है, परंतु वह अंदर-ही-अंदर इस समस्या से पीड़ित है। लेखक का स्वयं के माध्यम से व्यंग्य यही है कि आज समाज के बहुसंख्यक लोग अपनी दयनीय स्थिति को अपने बाहरी आचरण से प्रकट नहीं होने देते। वे उस पर संपन्नता का परदा डाले रखते हैं, जबकि भीतर-ही-भीतर अपनी विपन्नता की पीड़ा को अपनी बनावटी हँसी के साथ सहते रहते हैं।

प्रश्न 27 : प्रेमचंद फटा जूता भी ठाठ से क्यों पहन सके? लेखक ऐसा क्यों नहीं कर सकता था?

उत्तर : प्रेमचंद ने अपनी दरिद्रता को बड़ी सहजता से स्वीकार कर लिया था। इसलिए उनके मन में किसी प्रकार की हीनता की ग्रंथि नहीं थी। वह अपनी गरीबी को छिपाना भी नहीं चाहते थे, जैसे कि यह उनकी नियति थी। उन्हें दुर्भाग्य या अपनी निर्धनता से कोई शिकायत नहीं थी, क्योंकि इसे वे अपनी कमी नहीं मानते थे और न ही उसे आत्मसम्मान से जोड़कर देखते थे। इसलिए वे पूरे आत्मबल के साथ ठाठ से फटा जूता पहन सके।

लेखक ऐसा नहीं कर सकता था, क्योंकि लेखक को अपनी गरीबी में अपनी हीनता नज़र आती है। गरीब होने को वह अपनी कमी मानता है, उसे आत्मसम्मान से जोड़कर देखता है।

प्रश्न 28 : लेखक के अनुसार प्रेमचंद के जूते फटने का क्या कारण था?

उत्तर : लेखक के अनुसार प्रेमचंद के जूते इसलिए फट गए थे, क्योंकि वे रास्ते में खड़ी किसी चट्टान को ठोकरें मार-मारकर हटाने का प्रयास करते रहे। वे उससे बचकर निकल जाने की बजाय उसे हटाने की कोशिश में लगे रहे। कथन का निहितार्थ है कि प्रेमचंद ने समाज की कुप्रथाओं और रूढ़ियों को अपने जीवन में लगातार चुनौती दी, यद्यपि संघर्ष करते-करते उनका जूता अवश्य फट गया, किंतु समाज की व्यवस्था न बदली। वे इतने निर्धन थे कि जीवन में फटा जूता पहनकर ही काम चलाते रहे अर्थात् सारे प्रयास के बावजूद अपने जीवन को सुविधामय न बना सके।

प्रश्न 29 : क्या चीज़ परत-दर-परत जम गई है, जिसे ठोकर मारते-मारते प्रेमचंद के जूते फट गए हैं?

उत्तर : परत-दर-परत जमने वाली चीज़ है–सामाजिक रूढ़ियाँ। यह प्रेमचंद के समय का कटु यथार्थ था। धर्म के नाम पर शोषण चरम पर था। दूसरी ओर महाजन किसानों-गरीबों से बेगार करवाते थे। चारों ओर अशिक्षा और भुखमरी व्याप्त थी। इन सबसे ऊपर अंग्रेज़ी दासता थी। दुर्भाग्य जैसे गरीब जनता के सामने आकर जम गया था।

प्रश्न 30 : लेखक हरिशंकर परसाई के अनुसार, प्रेमचंद किस पर व्यंग्य कर रहे हैं?

उत्तर : लेखक के अनुसार प्रेमचंद उन सभी लोगों पर व्यंग्य कर रहे हैं, जो अपनी कमज़ोरियों को ऊपर से छिपाने में लगे हैं, किंतु भीतर-ही-भीतर परेशान भी हैं। वे उन सभी लोगों पर भी हँस रहे हैं, जो अपने उद्देश्य के मार्ग में आई बाधाओं के कारण अपना रास्ता बदल लेते हैं। मुसीबतों को सुलझाने की बजाय उन्हें वैसा ही छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं। इस प्रकार वे कुरीतियों को मिटाते नहीं हैं और उन्हें जड़ जमाते जाने का अवसर प्रदान करते हैं।

प्रश्न 31 : प्रेमचंद की मुसकान में छिपा व्यंग्य बताइए।

उत्तर : प्रेमचंद की मुसकान में एक ऐसा व्यंग्य छिपा हुआ है, मानो वे कह रहे हों–मैंने ठोकरें मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया। मेरी अंगुली जूता फाड़कर बाहर निकल आई, परंतु पाँव बचा रहा। इसलिए मैं चलता रहा, आगे बढ़ता रहा। संकेतार्थ यह है कि मैंने मुसीबतें झेलीं, कष्ट सहे, गरीबी झेली, किंतु अपने आत्मबल को बनाए रखा। इसी आत्मशक्ति के बल पर मैं अपना साहित्यकर्म भी ईमानदारी से करता रहा। परंतु जो लोग दिखावटी जीवन जीने में अपना आत्मबल खो रहे हैं, उनका जीवन कैसा हो जाएगा? वे अपने जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति कैसे करेंगे? उनका जीवन किसी लक्ष्य को कैसे प्राप्त कर सकेगा?

प्रश्न 32 : प्रेमचंद को किनके चलने की चिंता है?

उत्तर : प्रेमचंद को उनके चलने की चिंता है, जो अंगुली को ढँकने के प्रयास में अपने तलुवे को बेकार कर रहे हैं; अर्थात् प्रेमचंद को अपने युग के उन लेखकों की चिंता है, जो दिखावटी जीवन जी रहे हैं और इसी कारण अंदर-ही-अंदर सिमटते जा रहे हैं। जो संकटों को न झेलने के कारण आत्मबल खोते जा रहे हैं। प्रेमचंद को ऐसा लगता है कि जीवन की वास्तविकता को उसी रूप में स्वीकार किए बिना तथा संकटों का आमना-सामना किए बिना लेखन या कोई अन्य कार्य (सामाजिक या व्यक्तिगत कोई भी हो) श्रेष्ठ रूप में नहीं किया जा सकता। कर्म की श्रेष्ठता के लिए जीवन में वास्तविकता का स्पर्श आवश्यक है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर-विकल्प चुनकर लिखिए–

मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है। यों ऊपर से अच्छा दिखता है। अंगुली बाहर नहीं निकलती, पर अँगूठे के नीचे तला फट गया है। अँगूठा ज़मीन से घिसता है और पैनी मिट्टी पर कभी रगड़ खाकर लहूलुहान भी हो जाता है। पूरा तला गिर जाएगा, पूरा पंजा छिल जाएगा, मगर अंगुली बाहर नहीं दिखेगी। तुम्हारी अंगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है। मेरी अंगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है। तुम परदे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं! तुम फटा जूता बड़े ठाठ से पहने हो! मैं ऐसे नहीं पहन सकता। फोटो तो ज़िंदगीभर इस तरह नहीं खिचाऊँ, चाहे कोई जीवनी बिना फोटो के ही छाप दे।

1. लेखक का जूता कैसा है–

(क) नया है (ख) पुराना है

(ग) बहुत अच्छा नहीं है (घ) बहुत अच्छा है।

2. लेखक का जूता कहाँ से फट गया है–

(क) आगे से (ख) पीछे से

(ग) नीचे से (घ) ऊपर से।

3. लेखक के फटे जूते का परिणाम है–

(क) अँगूठा ज़मीन से घिसता है

(ख) पैनी मिट्टी से रगड़ खाकर लहूलुहान हो जाता है

(ग) पूरा पंजा छिल जाता है

(घ) उपर्युक्त सभी।

4. लेखक के अनुसार प्रेमचंद किसका महत्त्व नहीं जानते–

(क) जूते का (ख) परदे का

(ग) टोपी का (घ) कुरते का।

5. प्रेमचंद फटा जूते कैसे पहने हुए हैं–

(क) बड़ी विवशता से (ख) बड़े दुःख से

(ग) बड़े ठाठ से (घ) लापरवाही से।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. प्रेमचंद के पाँव में कैसे जूते हैं–

(क) चमड़े के

(ख) रबर के

(ग) केनवस के

(घ) इनमें से कोई नहीं।

7. प्रेमचंद की वेशभूषा से क्या पता चलता है–

(क) उनकी आडंबरपूर्ण जीवन-शैली का

(ख) उनकी अच्छी आर्थिक स्थिति का

(ग) उनकी कमज़ोर आर्थिक स्थिति का

(घ) उनकी शृंगार प्रियता का।

8. प्रेमचंद के फटे जूते लेखक के जूतों से क्यों श्रेष्ठ हैं–

(क) प्रेमचंद के जूते आरामदायक हैं

(ख) प्रेमचंद के जूते कीमती हैं

(ग) प्रेमचंद के जूते सुंदर हैं

(घ) प्रेमचंद के जूतों में पाँव सुरक्षित हैं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. प्रेमचंद का जूता फटने की कौन-सी संभावनाएँ लेखक ने व्यक्त की हैं?

10. 'प्रेमचंद आडंबररहित जीवन के पक्षधर थे'–कथन पर अपना मंतव्य दीजिए।

11. 'तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे।' –वाक्य में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

12. प्रेमचंद की मुसकान में छिपा व्यंग्य बताइए।

●